स्वदेश
(25.05.2015)

पीने योग्य नहीं जेल का पानी

जेल कर्मी और कैदी के स्वास्थ्य पर प्रभाव

« मंडला। मुख्यालय स्थित जिला जेल का पानी पीने योग्य नहीं है। गत दो माह से पानी मटमैला और कठोर निकल रहा है। जिसके कारण जेल कर्मियों और कैदियों के स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ रहा है। जेल प्रबंधन ने पानी का परीक्षण कराया। जिसमें फ्लोराइड की मात्रा अधिक निकली है। जिसके बाद से जेल में पानी की वैकल्पिक व्यवस्था बनाई जा रही है। बताया गया है कि जिला जेल मंडला में तैनात पेयजल के लिए बोरिंग की व्यवस्था है। पूरा जेल और कालोनी में इसी बोरिंग से पेयजल की सप्लाई की जाती है। गत दो माह से पानी की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। पीने के पानी में गड़बड़ी होने के कारण जेल विभाग के कर्मियों की सेहत बिगड़ने लगी। पेट संबंधी समस्याएं होने लगी। बार बार बीमार होने पर जेल प्रबंधन संकते में आ गया। कैदियों के भी स्वास्थ्य पर प्रभाव देखा गया। कुछ कर्मचारियों द्वारा पेयजल बदलने पर फर्क महसूस हुआ। जिसके बाद जेल स्थित बोरिंग पानी का सेम्पल जांच कराया गया। एक निजी कंपनी के कर्मी द्वारा पानी की जाँच की गई। जिसमें फ्लोराइड व अन्य मिनिरल्स की अधिकता पाई गई। इसके बाद से जेल प्रबंधन ने पीने के पानी का स्त्रोत बदलने का निर्णय लिया। बताया गया है कि जेल में बोरिंग से ही पानी की सप्लाई शुरू से होते आ रही है। नगर के मध्य होते हुए भी यहां नगरपालिका का नल कनेक्शन नहीं लिया गया है। इसके पहले भी कई अधिकारी व कर्मी बोरिंग का पानी ही उपयोग करते रहे है। जिनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हुआ है। पानी की उस समय जांच नहीं कराई गई।

दैनिक जागरण
(26-06-2015)

आंगनबाड़ी में रसोइयों को पगार में मिल रही हैं बची रोटियां

जागरण, विदिशा। आंगनबाड़ियों में रसोइए का काम कर रहीं महिलाओं को वेतन नहीं मिल रही। हालात यह है कि 8-10 महीने से आंगनबाड़ियों में न तो बच्चों को नाश्ता मिला है और न ही भोजन। पूर्व में किए गए काम के बदले मात्र खाना बचने के बाद जो रोटी बचती हैं वही वेतन के रूप में बचती थीं। ऐसा मामला

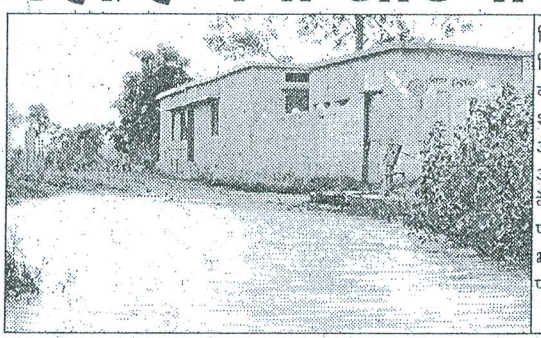

विदिशा। निमखिरिया का मांध्यमिक शाला स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्र जिसके पहुंचमार्ग पर भरा हुआ है पानी।

◆ समूह के विवाद में सेमरा के बच्चे भोजन से वंचित

ग्राम सेमरा में सामने आया है।

आंगनबाड़ी में रसोइए का काम कर रहीं राजबाई गौर दो-तीन वर्षों से खाना बना रही हैं उन्हें आज तक एक रुपए भी नहीं मिला। उन्हें खाना बंटने के बाद जो रोटी बचती हैं, वहीं पगार कहलाती है। उन्होंने कहा कि छह माह से आंगनबाड़ी में न तो खाना बटा है और न ही नाश्ता। अध्यक्ष अंगूरी बाई के साथ एसबीआई बैंक में उनका खाता है। वह बैंक जाती हैं और हस्ताक्षर करके रुपए निकलवा देती हैं। बाकी पैसा अध्यक्ष रख लेतीं हैं और वह अपने हिसाब से संचालन करती हैं अगूंरी बाई ने कहा कि दो या तीन रोटी बचे वहीं होती है। हरिबाई ने बताया कि समूह वाले सामान लाकर नहीं दे रहे। यहां पर 40 बच्चे दर्ज हैं। महिला बाल विकास द्वारा रसोइयों को अलग से पगार दी जाती है और यह सीधे खाते में जाती है लेकिन अध्यक्ष के साथ संयुक्त खाता होने के कारण इस प्रकार की स्थिति निर्मित हो रही है। ठीक ऐसा ही मामला छीरखेड़ा आंगनबाड़ी का है जहां कार्यकर्ता शीला केवट को आठ माह से वेतन नहीं मिला।

वह दो आंगनबाड़ियों में भोजन बनाने का काम करती हैं। दोनों आंगनबाड़ियों में 30-30 बच्चे दर्ज हैं।

समूहों के विवाद में नहीं मिलता मध्याह्न भोजन: सेमरा शाप्रशा में समूह की लड़ाई में बच्चों को खाना नहीं मिल पा रहा। आंगनबाड़ी में विगत छह महीनों से बच्चों को नाश्ता और भोजन नहीं मिला।

सहायिका के रूप में हरिबाई काम करती हैं। जबकि प्रीति शर्मा आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हैं गुरुवार को गांव पर नहीं थीं। लक्ष्मण सिंह और मचलसिंह के समूह में विवाद चल रहा है।